|  |
| --- |
| 28. April 2024 |
| **5. Sonntag der Osterzeit B** |
| Erste Lesung: Apg 9,26-31; Zweite Lesung: 1 Joh 3,18-24; Evangelium: Joh 15,1-8 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 329, 1+2+5 | Das ist der Tag |
|  | GL 757, 1+2 | Nun freue dich |
|  | GL 318, 1-3 | Christ ist erstanden |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 157 | Herr, erbarme dich |
|  | GL 163, 7 | Herr Jesus, du rufst |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 701 | Lasst uns Gott, dem Herrn |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 22,26-28 u. 30ab.31-32 |
|  | Kehrverse: |  |
|  | GL 401 | Lobet den Herrn |
|  | GL 631, 1 | Singt, ihr Christen |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 328, 1+5+6 | Gelobt sei Gott |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Bleibt in mir und ich bleibe in euch.* |
|  | *Wer in mir bleibt, der bringt reiche Frucht.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 491, 1-3 | Ich bin getauft |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 2+4 | Ich bin euer Weg geworden |
|  | GL 325, 1-3 | Bleibe bei uns |
|  |  |  |
| Sanctus | GL 193 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 498, 2+3 | Hier ist das wahre Osterlamm |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 366, 1+2! | Jesus Christus, guter Hirte |
|  | GL 484, 1+5! | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 357, 3 | Gieß sehr tief in mein Herz hinein |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 761, 2 | Jesu, dir jauchzt alles zu |
|  | GL 763, 1+2 | Sei Siegesfürst, gebenedeit |